साहस

2023

dhanak

परिचय

यह साहस नामक पत्रिका धनक से जुड़े अंतर-धार्मिक/जातीय जोड़ों या हम ख़याल लोगों के निजी अनुभवों का आठवाँ संकलन है. वर्ष 2014 से यह साहसी प्रयास इस मंशा के साथ जारी है कि इस संपादन के ज़रिए हम अपने जीवन के कुछ मुश्किल, उत्साहवर्धक और ख़ुशनुमाँ लम्हों को शब्दों में पिरो कर पेश कर सकें।

हमारा समाज हर चीज़ में ख़ालिस ढूंदने का इतना आदि हो चुका है कि इंसानों में भी शुद्धता चाहता है। लोग काला – सफ़ेद, असली – नकली, सही – ग़लत तलाशने और दिखाने के इतने आदि हो गए हैं कि, दोनों हदों के बीच के रंग या भेद को नज़रंदाज़ कर देना चाहते है। क्योंकि, किसी भी व्यवस्था को दो हदों के पैमाने के ज़रिए बचाए रखना आसान है। पर दुनिया को कायम रखने में मध्यमर्गियों या मौका परस्त कहलाए जाने वालों का बड़ा योगदान है। इसलिए यह संकलन समाजिक और परिवारिक व्यवस्था को सही मानने वाले लोगों को शायद कम पसंद आएगा।

यह पत्रिका परिवार, धर्म और जाति व्यवस्था से पीड़ित लोगों को एक माध्यम देता है कि वोह अपनी आप बीती लिखित में बयाँ कर सके। यह पत्रिका, पारिवारिक रूढ़ीवादिता से पीड़ित उन लोगों के लिए भी ज़रूरी संकलन है जो यह मानते हैं कि उन्होंने मिश्र विवाह करके बहुत बड़ा गुनाह कर दिया है और नतीजतन गुमनामी की ज़िन्दगी जीने पर मजबूर हो जाते हैं।

हो सकता है कि आपको पत्रिका के कुछ लेख बहुत ही सामान्य लगें। सामान्य इसलिए हैं क्योंकि, यह उन लोगों की आवाज़ें हैं जिन्होंने अपने विचारों को पहले कभी नहीं लिखा। उन्हें लिखने का तजुर्बा बिलकुल नहीं था। कुछ तो ऐसे भी लेखक हैं जिनका यह पहला प्रयास है और उन्होंने बहुत ही मासूम या मामूली बातें लिखीं या पूछी हैं। पर उनकी मासूमियत हर उस बुद्धिजीवी या सभ्य व्यक्ति को एक चुनौती देती है जिसे लगने लगा है कि वह एक शुद्ध और विकसित समाज का अंग है।

लेख और कविताएँ भेजने के लिए सभी साथियों का शुक्रिया। लेखों को जमा और संपादन मे धनक संगठन की शबाना का महत्वपूर्ण योगदान रहा। नए और शर्मीले लेखकों को लिखने के लिए प्रोत्साहित करने में भी उनकी बड़ी भूमिका रही। पत्रिका की प्रस्तुति और प्रारूपण के लिए रानू की बड़ी भूमिका रही। दोनों साथियों की मदद के बिना साहस पत्रिका का आप तक पहुँचाना नामुमकिन था।

आसिफ़ इक़बाल
(सह-संस्थापक, धनक)

मोहब्बत और इबादत एक सी ही तो होती है,
जब तक मुक़म्मल ना हो फ़िज़ूल सी लगती है |

मगर फिर भी इन मे जुनून ही कुछ ऐसा है कि,
सौ बार हार कर भी करते रहने को मजबूर करती है ||

-Aditya

साथ मिलकर छूटा

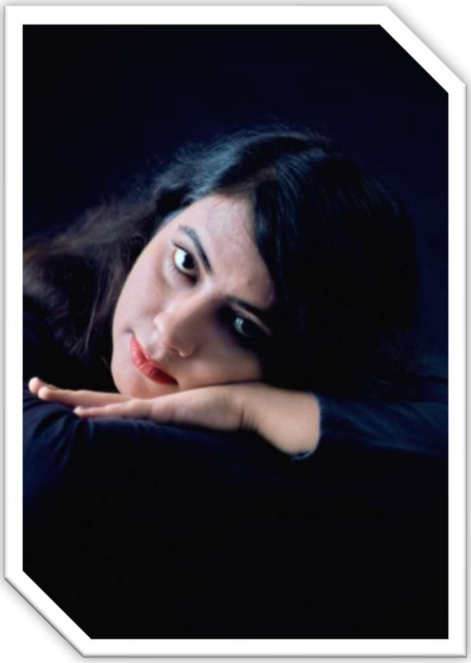

हिम्मत बंधकर बिखरी
लोगो पर भरोसा होकर टूटा
यूँ तो अच्छा लगा था मिलकर गैरों से पहले भी
पहले भी दिल टूटकर उनसे मोहब्बत कर उठा
लेकिन उस रात तुमसे मिलकर कुछ अलग सा लगा
दिल न धड़का दधकते अंगारों सा
मन न डगमगाया सही और गलत के पलड़ों में
बरसते अम्बर के नीचे, गरजते बादलों के शोर में भी
दिल में राहत थी वक़्त मानो ठहर सा गया वहीं
कुछ तो करिश्मा किया कुदरत ने
तभी उस श्याम का उसी तरह होना लिखा था तेरी कुरबत में

-Ayesha

भागी हुई लड़कियाँ

भागी हुई लड़कियाँ, भागना नहीं चाहतीं |
अपने घर को छोड़ना नहीं चाहतीं, माँ-बाप के आंसू देखना नहीं चाहतीं |
लेकिन घुट-घुट के जीना भी नहीं चाहतीं, मजबूरी में हसरते खोना नहीं चाहतीं |
मर जाना नहीं चाहतीं.....
वो चाहतीं हैं ऐसी दुनिया को बनाना, जहाँ मोहब्बत ही मोहब्बत हो |
वो चाहतीं हैं सपनो को साकार होते देखना , वो हर पल को जीना चाहतीं हैं|
आज़ाद आसमाँ के उस परिंदे की तरह जो किसी के आगे नहीं झुकता....
वो चाहतीं हैं अपनी एक हस्ती बनाना, जिसे कल वो देखे तो बेख़ौफ़ आज़ाद महसूस कर सकें |
भागी हुई लड़किया भी नाज़ुक होती हैं, बात बात पर वो भी रोती है|
पर फिर खड़ी होती हैं, दुनिया से लड़ने के लिए, मजबूत होकर,अपनी दुनिया बसाने को उनका भागना तो सभी को दिखता है, मगर उन सिसकियों का क्या जो किसी को नहीं दिखतीं|
हर पल मरने से अच्छा, वो अपनी मौत को खुद चुनतीं हैं, अपनी ज़िंदगी खुद चुनतीं हैं|

- कोमल कश्यप

जुनून ए दिवानगी

जुनून ए दिवानगी उसकी इस कदर थी की सभी के दिलो को छुता ओर मिटाता चला वो सरहदो का फासला,

समाज मे फैले साम्प्रदायिकता की संकीर्ण मनोवृति को पीछे छोड़ते हुए सह अस्तित्व के सिद्धांत को परिभाषित करता, अनगिनत फ़ूल संजोए इस बगिया में, देश हित में कर न्योछावर

शांति के उज्ज्वल भोर की ओर मार्ग प्रशस्त करता हुआ, धरती की माटी में रंग प्यार के घोलता ऐसा है अपना प्यारा ....धनक

- **राधा**

काश ऐसा हो जाए

सुबह जब नींद से तुम जागो, तो काश ऐसा हो जाए,
अंधेरा भागे लेके अपनी चादर काली
सितारे समेट के, फलक भी हो जाए खाली

फ़िर बिखरे वो रंग के कोई कोना न छूटे
ये आसमा, ये ज़मीन सब सुर्र-खो रंगीन हो जाए

तेरे लबों को छूकर ये हसीं फ़िज़ा मे ऐसे बिखरे
के सूरज भी जल के लाल हो जाए

मिले वो सब तुझे जिनके सपनो मे खोए थे रात भर
हकीकत बने, और खुशियों मे तब्दील हो जाएं

मेरी आँखों के किनारों से सपनो की कालक् हटे
और तेरी सोच मे डूबे, ओ मेहरबां, मेरी नींद यूँ ही टूट जाए
सुबहा जब नींद से तुम जागो, तो काश ऐसा हो जाए।।

- जमाल

बीतते पल

साझा करुँगी मैं आज
अपने बीते हुए पलों के जज़्बात
हो गए है हमारी शादी को तीन साल
कुछ खास नज़र नहीं आता बदलाव
आज भी समाज के ठेकेदार
नहीं कर रहे हैं हमें स्वीकार
आज भी हम लड़ रहे हैं बेबाक़
करके अपने जज़्बातों को दर-किनार
ये तो समझ आ गया
प्यार की राह होती नहीं आसान
कभी सुख तो कभी दुःख
आतेजाते हैं - जैसे महमान
जब आया हमारे घर नन्हा राजकुमार
हम दोनों खुश थे बेशुमार
दादा दादी ने भी खुशियों का किया इज़हार -
लेकिन नानानानी के मन में तब भी है तकरार-
पोते को हो गए है तीन साल
लेकिन नानानानी- ने नहीं देखा एक भी बार
हाँमामा-मौसी ने बहुत बार किया दीदार !
फिर भी अधूरा लगता है यह व्यव्हार,
तीन सालों में हम हो गए और मज़बूत,
प्यार और ज़िम्मेदारी निभा रहे है बख़ूब
आने वाली पीढ़ी के लिए
हम है एक अच्छा सबूत |

- आरती तिवारी

पहचान

अपनी ही पहचान बदली बदली सी है,
मैंने खुद को कुछ यूं खोते देखा है।

अपनी मन की करने के लिए दूसरों की मर्ज़ियों से लड़ जाया करती थी,
पर अब तो खुद से भी जीत न पाया करती हूँ ।

अपनी शर्तों में जीने वाली ज़िंदगी “मैं”,
अब खुद से ही डर जाया करती हूँ ।

अपनी ही ख्वाइशों में ही कही गुम रहा करती थी,
ना हदों की फिक्र थी, ना दायरों का पता था

पर अब तो खुद से भी बाहर नहीं निकल पाती हूँ।
अपनी तनहाई में इस कदर गुम हो गई हूँ, कि शोर तो दूर,

अब तो आवाजों से भी सहम जाया करती हूँ।
खुशी मुझे इस रोशनी से ज्यादा अँधेरों से मिला करती थी।

पर अब तो इन अँधेरों से भी खुद को बचाया करती हूँ।
पहले रातों का इंतज़ार पूरे दिन किया करती थी,

थोड़ा सा ही सही लेकिन खुद को पा लिया करती थी,
पर अब तो ये अकेलापन भी सहा नहीं जाता है।

खुद में सिमट के यू रह गई हूँ की,
अब तो खुद को बयान भी नहीं किया जाता है।

-परी

मुंबई से दिल्ली साइकिल यात्रा

जबरन शादी और इज्ज़त के नाम पर अपराध के ख़िलाफ़

रात के २ बजे एक फोन कॉल आता है और आवाज आती है, " भाई मै बोल रहा हूं, दीदी से बात करो उन्हें कुछ हो गया है। उनका मानसिक संतुलन खो गया है, आपसे बात करके शायद ठीक हो जायेगा।" फिर आवाज़ बदलती है, " मैं मां बोल रही हूं और तूने मेरी लड़की को पागल कर दिया।" फिर से आवाज़ बदलती है और इस बार गंदी-गंदी गालियां सुनाई देने लगी क्योंकि इस बार बाप बोल रहे थे । अंतिम बार फिर आवाज़ बदलती है और इस बार वह आवाज़ आती है जो दुःख, दर्द, पीड़ा, तरस और तड़प से भरी हुई थी। उस आवाज़ को ये नहीं पता था कि किसको सुनाई दे रही है, क्यों और कहाँ जा रही है। बस एक ही वाक्य कि, ये लोग बहुत ज़िद्दी हैं, ये नहीं मानेंगे और फ़ोन कट जाता है। मेरी नींद-चैन सब उड़ गया, बस बेचैनी में यही लगता है कि, आखिर क्या हुआ होगा? क्या हो रहा होगा? और क्या होने वाला है ?

रात भर जागते हुए यही जानने की कोशिश की, कि सब ठीक तो है न? लेकिन एक दिन बाद जब बात हुई तब पता चला कि जबरदस्ती किसी के साथ शादी करवाने का विरोध और अपनी पसंद के लड़के से शादी करने की बात कहने की वजह से उसके साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है। शारीरिक और मानसिक शोषण किया जा रहा है। ये कहानी है एक लड़की की जो कहने को तो बहुत मॉडर्न और पढ़ी-लिखी अपने पैरों पर खड़ी है , लेकिन उसे अपना जीवनसाथी चुनने का हक तक नहीं है। एक लड़की जो हमेशा जेंडर इक्वालिटी पर भरोसा रखती है और बहुत ही साहसी होने का दावा करती है। फिर भी अपने ही घर में दूसरों के सपनों के लिए अपनी खुशियां और सपनों को बलिदान करने का सोचने लगती है ।

वो रात मेरे लिए इतनी आसान तो न होने वाली थी। जो दिल-दिमाग़ में समा कर जिंदगी बन चुका हो वो कहीं तड़पाया जा रहा हो, तब कैसा महसूस होता है? बताना बहुत मुश्किल है ।
आखिर ऐसे कितने लोग हैं जिन्हें हर रोज़ मार दिया जाता है, तड़पाया जाता हैऔर जबरन शादी के लिए मजबूर किया जाता है। आख़िर इसकी बात होनी चाहिए, लोगों को समझना चाहिए कि जबरन शादी एक पाप से कम तो बिल्कुल भी नहीं है।

इस विषय पर बात करना इस समय समाज की जरूरत बन गया है और करना भी चाहिए, इसलिए मैंने साइकिल के माध्यम से ये बात रखने की कोशिश की। ताकि शायद कुछ लोगों को अपनी बात रखने की हिम्मत आए। मेरी ये साइकिल यात्रा उन सभी भाइयों और बहनों को समर्पित है जो जबरन शादी या इज्ज़त के नाम पर हत्याएं और अपराध जैसी समस्याओं से लड़ रहे है। हमारा जीवन साथी हमारी पसंद का होना चाहिए न कि पूरी दुनिया का,

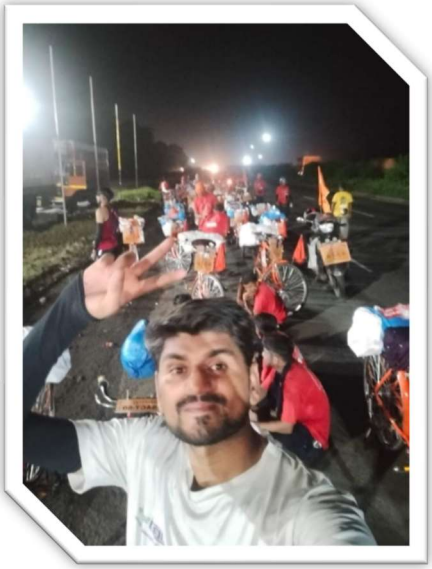

ये बात सबको समझ भी आती है लेकिन हिम्मत नहीं होती समाज के रखने की, आखिर क्यों ? किस बात का इतना डर ? इज्ज़त चली जाने का क्या?

हमारे समाज में पुलिस का भ्रष्टाचार करने में, नेताओं को झूठे वादे करने में, लोगों को भ्रष्टाचार करने में, परिवार को तुम्हारे साथ जबरदस्ती करने में, न तो शर्म आती है ,ना इज्ज़त जाती है; तो आख़िर हमको प्यार करने और उसका इज़हार करने में इतनी शर्म और डर क्यों?

जबरन शादी करवाना किसी पाप से कम नहीं । जबरन शादी परिवार और रिश्तेदारों के द्वारा पूर्व व्यवस्थित तरीके से किसी की भावनाओं और आत्मा का सामूहिक बलात्कार करवाने से जैसा है, और जो लोग ऐसा करते हैं वो जानवरों से कम नहीं।

२१ सितंबर को गेटवे ऑफ इंडिया, मुंबई से 1600 कि.मी. की अपनी यात्रा की शुरुआत यह सोचते हुए शुरू की, कि लोग जुड़ेंगे, साथ मिलेगा और हिम्मत बढ़ेगी। मेरी भी और उन लोगों की भी जिनको मेरी ये यात्रा समर्पित है। गर्मी और बरसात में साइकिल से इतना दूर चलना आसान तो नहीं होता लेकिन जब मन में कुछ उम्मीद बनी हुई होती तो मुश्किल कुछ भी नहीं होता। बस यही सोचकर चलता गया, रास्ते में बहुत अच्छे लोगों से मुलाकात हुई, बात हुई और दोस्त बने। 10 दिनों बाद 30 सितंबर को इंडिया गेट दिल्ली पहुंचकर अपनी यात्रा को पूरा किया।

मुझे यह तो नही पता कि लोग मेरी यात्रा देख कर या सुनकर कुछ हिम्मत कर पा रहे है या नहीं, लेकिन मुझमें हिम्मत तो आ चुकी थी की सही को सही और गलत को गलत कहा जाना चाहिए। फिर चाहे वो अपनों के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो।

आज 31 जनवरी है, और वो पहला इंसान जिसको देखकर मुझे ऐसा करने का मन हुआ था वो अब अपनी हिम्मत खो चुका है और अपने आपको समाज के लिए, अपने मां बाप के सामने समर्पित कर चुका है । शायद मेरी ये यात्रा व्यर्थ हो चुकी है। पर जब देखता हूं कि दूसरे लोग मुझे देखकर अपनी हिम्मत बढ़ा पा रहे हैं समाज के आगे डट कर खड़े हैं, तब अच्छा लगता है। ख़ुद के ना सही पर और के काम आई मेरी हिम्मत। तो हिम्मत करते रहें। डरकर, घबरा कर रुके नहीं, झुके नहीं।

गौरव सिंह

(आपका साइकिल दोस्त)

प्रेम विवाह और पारंपरिक विवाह.....मेरी नज़र में

मैं बशारत शेख हूँ और मुस्लिम हूं। मैंने सूरज प्रताप दामोदर, जो बौद्ध हैं, उनसे शादी की है। यानि मेरा अंतर-धार्मिक विवाह है। हमें शादी में 'धनक' संस्था ने बहुत मदद की है। 'धनक' की वजह से ही हमें दिल्ली में रहने के लिए सेफ हाउस मिला है। भारत में आज़ादी के 75 सालों के बाद भी समाज की सोच प्रेम विवाह को लेकर बदली नहीं है। समाज में अभी भी पारंपरिक विवाह पर ही भरोसा दिखाया जाता है। शादी जीवनभर का रिश्ता होता है। कोई परंपरागत विवाह के बारे में सोचता है तो कोई प्रेम विवाह के लिए सोचता है। मैंने प्रेम विवाह के लिए सोचा और प्रेम विवाह कर भी लिया और मैं अपने फैसले से बहुत खुश हूं। मेरी नज़र में प्रेम विवाह पारंपरिक विवाह से अलग है; क्योंकि प्रेम विवाह में पार्टनर एक दूसरे को पहले से जानते हैं। प्रेम विवाह में प्रेम, परवाह, आकर्षण, सहानुभूति, और वादे सब का मेल होता है। जब की पारंपरिक विवाह में पार्टनर को उसकी शख्सियत, बैकग्राउंड, स्टेटस से मैच किया जाता है। पारंपरिक विवाह में पार्टनर परिवार द्वारा पसंद किया जाता है तो पार्टनर को भरपूर सपोर्ट मिलता है। लड़की को मायके से रिश्ता होता है, आना जाना होता है और मायके से सपोर्ट होता है।

प्रेम विवाह करने वाली लड़कियों को मायका नसीब नहीं होता है, पर उसका पार्टनर कोशिश करता है कि लड़की को मायके की कमी महसूस न हो। सूरज और मैं एक दूसरे को कॉलेज से जानते है इसीलिए हमें एक दूसरे की पसंद नापसंद पहले से पता है। पर परम्परागत विवाह करने वाले को पता नहीं होता है के पार्टनर को क्या पसंद है, क्या नहीं। अगर मैं अपनी बत करूं, तो सूरज मुझे मनाने के लिए किटकैट, रसगुल्ला लेकर आते हैं, पर पारंपरिक विवाह में देखा जाए तो यह सब चीजों को अहमियत नहीं दी जाती है। अगर फिर भी पार्टनर को कुछ देना हो तब घरवालों से छुपकर देना पड़ता है।

परंपरागत विवाह में आप प्यार का इज़हार तक नहीं कर पाते हैं। प्रेम विवाह में पार्टनर के बीच के झगड़े दोनों आपस में सुलझा लेते हैं, पर परंपरागत विवाह में लगभग परिजनों द्वारा सुलझाए जाते है। प्रेम विवाह में जोड़े करियर पे ध्यान देते हैं आपस में सोचकर आगे की प्लानिंग करते हैं। पारंपरिक विवाह में लड़की को करियर पर ध्यान देने का मौका नहीं मिलता है ;क्योंकि ससुराल वालों को एक साल में बच्चा चाहिए। प्रेम विवाह में बच्चे की प्लानिंग आपस में सोचकर करते हैं। पारंपरिक विवाह में कभी ऐसा भी होता है लड़की या लड़के शादी के पहले किसी और लड़के या लड़की से प्यार करते थे पर घरवालों के दबाव में किसी और से शादी कर लेते हैं और पार्टनर को उनके हिस्से का प्यार नहीं दे पाते। ससुराल मायके में इस बात से क्लेश भी होता है। लास्ट में यही कहूंगी कि मैंने प्रेम विवाह चुना है क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी का फैसला खुद लिया है और मैं इस फैसले से ख़ुश हूं। हर लड़की की अपने फैसले खुद लेने का मौका मिलना चाहिए।अगर न मिले तो लड़कियों को बगावत करनी ही पड़ेगी !!!

- Basharat

जीवनसाथी में दोस्त

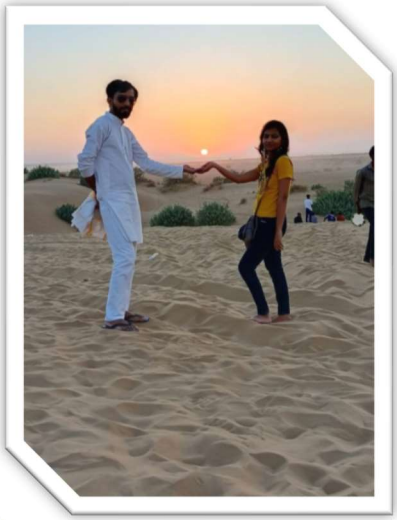

ये कहानी है पूजा और फारूख़ की है जिनका मानना था कि सबसे अच्छे जीवन साथी से पहले अच्छा दोस्त होना ज़रूरी है तभी आप उसे रिश्ते की अहमियत को समझ सकते हैं। अगर आप अच्छे फ्रेंड्स नही है तो आप कभी अच्छे जीवन साथी भी नहीं बन सकते हैं|

"न चाँद की चाहत और
न सितारों की फरमाइश
हर जन्म में तू मिले
मेरी बस यही ख्वाहिश"

राजस्थान के टीलों से निकले पूजा और फारूख़ जो राजस्थान के छोटे से गांव से आते हैं| आज भी उनके गांव
में इन दोनों के चर्चे हर एक की जुबां पर मिल जायेंगे क्योंकि, दोनो एक अन्तर-धार्मिक जोड़ा हैं| जिस क्षेत्र से ये दोनो जुड़े हैं, वहा पर हर बात में हिन्दू मुस्लिम होता है। फ़िर चाहे वोह क्रिकेट मैच हो या कोई राजनीतिक चुनाव| दोनो भली भांति जानते थे इस जन्म में दोनो का मिलना नामुकिन है लेकिन फिर भी दोनो ने हार ना मानी और रोते हुए, भटकते हुए आखिर पहुंच गई प्यार के कोर्ट में| जी, हां अब आप सब सोच रहे होंगे की हाई कोर्ट सुना है, सुप्रीम कोर्ट सुना है लेकिन ये प्यार का कोर्ट कहा हैं? जी आपको हम दोनों मिलकर सुनाते है प्यार की कोर्ट की कहानी|

12 नवम्बर 2020, जब पूरा देश दिवाली मना रहा था उस दिन ये दोनों प्रेमी जयपुर से दिल्ली की बस देख रहे थे| रात का समय था, उस दिन बस भी नहीं थी क्योंकि दिवाली की छुट्टी थी| दोनो एक दुसरे का हाथ पकड़े सुनसान रोड़ पर हर एक टैक्सी वाले से पूछ रहे थे कि आप दिल्ली जा रहें हो| लेकिन कोई हां नही बोल रहा था| दोनों घबराए हुई थे क्योंकि दोनों अपनी फैमिली से महिला थाने जयपुर में मिल चुके थे। अन्त में एक टैक्सी वाला मिलता है और आवाज देता है धौला कुआँ, दिल्ली| पहले दोनों डर जाते हैं क्योंकि उस टैक्सी में 3 सवारी थीं और वो भी सिर्फ लड़के| दोनो के मन में अजीब अजीब सवाल आ रहे थेऔर आख़िर में दोनो सोचते हैं कि जो अच्छा ही होगा और दोनो उस टैक्सी में बैठ जाते हैं और चल पड़ते है प्यार की कोर्ट की तरफ|

ज़रा रुकिए अभी कहानी बाकी है दोनों रात के समय पहुंचते हैं दिल्ली जो एक अनजान शहर है दोनों के लिए| सुनसान सड़कों पर घूम रहे थे क्यों की दोनो उस प्यार के कोर्ट का पता ठीक से नहीं जानते थे| रात के 3 बजे किसी को फोन भी नही कर सकते थे क्यूंकि दोनों ने अपने फ़ोन अपने घर वालों के डर से बन्द कर रखे थे| आख़िर वो प्यार के कोर्ट (धनक) मे पहुंच जाते है| अब आप सोच रहे है की प्यार के कोर्ट का नाम धनक (धनक ऑफ ह्यूमैनिटी) कैसे हो सकता? और ये प्यार का कोर्ट कैसे हो सकता है? हम बताते हैं | ये प्यार का कोर्ट इसलिए कहा जाता है क्योंकि:

यहां प्यार की राहों में आ रही हर बाधा से लडने के लिए हिम्मत और कानूनी सहायता मिलती है | यहां पर जो भी जोड़ा आता है | उसका ना धर्म परिवर्तन होता है और ना कोई नाम में परिवर्तन होता| इस प्यार के कोर्ट में सुनवाई बहुत जल्दी होती है | इस प्यार के कोर्ट में स्पेशल मैरिज एक्ट में शादी के लिए मदद मिलती है और इस शादी में खर्चा बिल्कुल भी नही है|

नोट:- प्यार के कोर्ट (धनक) में शादी नही करवाते है,अपितु शादी की प्रक्रिया में मदद करते है, कानूनी रूप से |

अच्छा हुआ हम दोनों को ये प्यार का कोर्ट (धनक) मिल गई वर्ना पता नहीं हम किस सुनसान जगल में जले हुई या दफन मिलते| हम इस प्यार कोर्ट बहुत आभारी हैं क्योंकि आज राजस्थान के बालू मिट्टी से इस जोड़ों को निकालने की हिम्मत और जज़्बा दिया है |

अन्त मैं हम दोनों इस कहानी को पढ़ने वालों को बस एक ही बात बोलना चाहते हैं | डरें नहीं क्योंकि प्यार का कोर्ट आपके साथ है |

"हिन्दू मुस्लिम ना मानते हुई सब को हिंदुस्तानी माने"

जय हिन्द, जय भीम

पूजा & फारुक, राजस्थान

Interfaith: a conversation between my father and me.

This creative was made on Canva some years back and printed-posted on my door. I was healthy and walking at that time. Parents were pressurising for arrange marriage on every random call. *'Tere irade nek nahi lag rahe, kuch jyada hi liberal ban gaya hain koi hain toh bata dein. Isliye hamare yahan padhate nahi hain.'* In protest to resist these calls made this creative and said, 'find me a working woman like this, I will consider marrying her.' Safeena Madam run 'Educate Girls', an ngo work on education of girl child. My father said after a hiccup, '*yeh thoda umar mein jyada nahi hai.*' Mother added, '*Bola tha Bambai mat bhejo padhane, pata nahi kaunsi maslak se hain.*' I said listening to their reaction, perfectly hiding my interfaith relationship at that time, breaking out for them calmly, '*education domain mein ho, 25 saal ke upar umar ho, minimum Masters ki padhai ki ho, nauqari karti ho.*' Father repeating carefully emphasizing, '*Haan matlab apni tarah social worker chahiye tumhein. Par ladaki Musalman honi chahiye.*' I feebly uttered, '*Haan woh dekh lengey*.' My father said it loudly, '*Musalmaan se hi shaadi karega na*. I am a *kattar Muslim*.' I thought, this old man like drinking army issue Old Monk, smoke from last 40 years, offer namaz weekly on Friday, how last night he suddenly became *kattar Muslim*. I stuck the creative to door, as resistance and as regular visual for them to remind. Papa said after dinner, '*Tu pehli baar nahi rakh raha, yeh nauqari wali ladaki ka* requirement. *Meine bhi padhi likhi ladaki ki requirement rakhi thi tere dada ke saamne 35 saal pehle* to avoid marriage, *kyunki pureh gaon mein Jewrgi bus stand taq koi padhi likhi nahi thi.*'

Now everyone is calm, focussed on my health and treatment. Deteriorating health and ongoing treatment took the fun out of these small conversations. I have never met Safeena madam in person, possibly she will smile after reading this. Probably they will get shock of life if they learn more about Safeena madam's, marriage, kids, choices.

Vaseem Chaudhary

वज़ीफ़ा-ए-दर्द

Death..one of the universal truth of this momentary life, has always been inevitable and only certain thing ever. Nothing goes past it or survives, except the memories garnered during the life tenure.

आंखें है तर...दिल है भरा...
कोई क्या कह रहा है...कानो में है मोम रखा.. .
अल्फ़ाजों से कहां हो पाए ब्यान...ये दर्द-ए-इंतेहान

लोगो का खत्म हुआ...अब आवन जवान
सूना हुआ मकान.. और ये आंगन...
अकेले में बैठे सोचते है... क्या होगी तर्ज़-ए-जहाँ..

सुख-दुख भूले जिसकी फ़िक्र में...
चाहत थी...ज़िस्त [1] लंबी करेगा
जिसे पाला पोसा बड़ा किया..
छोड़ गया वही...तन्हा...उसे क्या फर्क पड़ेगा

अब इस बची हुई उम्र का क्या करे...एजाज़
जीना है मुश्किल, मरना है मुश्किल
ये फ़ितूर अब हर लम्हा करेगी असाब-ज़दह [2]...

किस किस को दे इलज़ाम, रही ज़ालिम सारी क़ायनात...
ये सबब थी बेवजह...है हमें इल्हाम [3]...

सूख गए हैं आंसू, पर सुकून है नहीं...
आंखों को रहेगा इंतजार, आ न जाए वो कहीं...

पता हो.. कहीं है...चलता है
पता हो.. नहीं है...कहा चलता है

- एजाज़

*1. ज़िस्त – ज़िन्दगी 2. असाब ज़दह-– परेशान 3. इल्हाम- एहसास

हरा– गेरुआ : देश में बढ़ती धार्मिक संकीर्णता

मेरे दो अज़ीज़ रंग हैं। पर अब दुनिया चाहती है मै एक को चुनूँ। क्यों भला, जब मेरी आँखों को दोनों भाते हैं और मेरे साथ में हो तो ज़्यादा बातें हैं। मेरी ख़ुशनसीबी है के दो रंग जब मिल जाते हैं तो तिरंगा ही बना देते हैं। यह दो रंग तो फिर यहाँ फिर सब को पसंद होने चाहिए। आधा तिरंगा मेरा, आधा तुम्हारा तो मुमकिन नहीं। छोटी सी बात है, मेरा तुम्हारा मुमकिन नहीं।

हमारी पीढ़ी वह पीढ़ी है जिसने एक बहुत ख़ूबसूरत हिंदुस्तान देखा है। आज़ाद तरक्की की तरफ़ बढ़ता हुआ, मेरा तुम्हारा से दूर। ईद दिवाली सब साथ मनाता हुआ। बचपन में काफ़ी अरसा तो यह भी एहसास नहीं था कि दिवाली हमारे घर नहीं मनती। वह औरों का त्यौहार है। धर्म और ज़ात का अता पता तो रहने ही दें।

मै समझती हूँ की पूरा हिन्दुस्तान शायद ना हो ऐसा पर मेरा बचपन तो ऐसा ही था। मेट्रो सिटी के नसदीक रहने का असर था शायद। बहुत ख़ूबसूरत वक्त था। किसी दोस्त या सहेली के घर आने-जाने की मनाही नहीं थी। धर्म ज़ात के नाम पर तो बिलकुल नहीं। जैसे जैसे बड़े हुए, एहसास हुआ कि सबकुछ हमेशा से ऐसा नहीं था। हमारे बड़े बहुत भेदभाव देख और झेलकर पार हुए हैं। अपने अनुभवों से सीखकर वे भेदभाव के माया जाल से बहार आए थे। बेशक सब नहीं, पर ज़्यादातर। आज जब हम ख़ुद बड़े हो गए हैं, हमारे बच्चे हैं उस उम्र में। आज का हिन्दुस्तान तो पूरी तरह से भेद भाव से बहार हो जाना चाहिए था।पर ऐसा क्यों है? हकीक़त में क्या यह वो ही माहौल है जो हम चानते थे?

बंटवारे के दौरान इतने मुश्किल हालात देखने वाले लोग जब भेद-भाव के नाम अत्याचार को भूल कर एक हो सकते हैं, तो आज की पीढ़ी इतनी विचलित क्यों है? क्यों आज धर्म-जाति को लेकर इतना कोहराम है? क्यों दोस्तों में इन बातों पर दूरी हो जा रही है? क्यों साथ साथ खाने-पीने, त्यौहार मानाने वाले पडोसी, दूर हो गए हैं? ऐसा क्या हुआ और क्यों हुआ? यह हमें सोचने की ज़रुरत है, कि हम किस तरह का हिन्दुस्तान अपने बच्चो के लिए विरासत में छोड़ना चाहते हैं? क्या आज हम धर्म को इतना महत्त्व दे रहे हैं, कि हमसे अपने ही छूट रहे हैं? क्या सच में धर्म सिखाता है आपस में बैर रखना? मैंने जो भी सीखा था वो था, "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"। फिर आज ऐसा क्या बदल गया? राजनीति आज हमें इतना क्यों बदल रही है? सोचने की ज़रूरत है। सियासी लोगों की चल में हम कुछ ज़यादा ही तो नहीं फंसते जा रहे?

हमारी पीढ़ी से यह सब बिगड़ा है और हमें ही संभालना है। ताकि हमारी अगली पीढ़ी को इसका ख़ामियाज़ा न भुगतना पड़े। याद रहे अगली पीड़ी और कुछ नहीं, हमारे बच्चे हैं। उन्हें दूसरे मज़हब में दोस्ती करने, प्यार करने व् शादी करने का पूर हक़ है। हमारी ग़लतियों की वजह से कहीं उन्हें अपने हक़ों से तो दूर नहीं कर रहे हम?

हमें एक ऐसा समाज, एक ऐसा देश बनाकर उन्हें सौंपना है जहाँ प्यार, मोहब्बत, भाईचारा इस कदर सर चढ़ कर बोले कि कोई सियासी सोच या ताक़त दोबारा इस देश का बंटवारा न कर सके। हमारे बच्चों को प्यार करने की सज़ा न मिले। कोई उन्हें देश छोड़कर जाने का ताना न मारे। कोई उनके नाम या कपड़ों पर कटाक्ष न मारे। मैंने बीड़ा उठाया है अपने आस-पास का माहौल बदलने का। आप सभी का साथ भी मिल जाए तो मेरे सपनों का हिन्दुस्तान साक्षात् संभव है।

-शबाना

INSIGHT

Challenging patriarchy within family

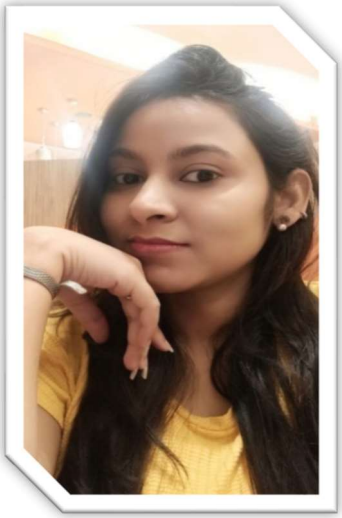

Every now and then, there are talks on article 21 of the constitution to give depth and detail to the inner aspects of the right to life, namely the right to privacy and right to choice.

But when a woman wants to exercise her rights for her betterment, suddenly the society becomes biased and starts her character assassination. It starts reminding her of roles and responsibilities. If she chooses a different role, then they term her as a 'vamp , 'house breaker' , '*bina sanskaro wali*', 'characterless' etc .

The so called leaders of society ensure that she never deviates from their 'defined list of roles and norms set by them' and silently succumbs to the impositions laid on her by the patriarchal society like. They are like wearing an *abaya* to prevent her movement or doing *ghoonghat* to limit her vision. The impositions are both physical and psychological just to restrict her growth.

The Patriarchal society easily controls on women in the name of religion. Women are kept ignorant from their constitutional rights, until some dire situation arrives. These women here live and die without the knowledge of their rights.

Women are used more to serve the political purpose of politicians rather than solving the real issues of them.

We need to understand that it is high time now to speak and fight for their rights. Every woman should be a part of this fight else the fight will go in vain.

It is important to keep in mind that when someone follows a different path, an example is set for others. It gives way to others. It gives a ray of hope to others. So every woman should question herself, 'Is she practicing her rights or just for others?

-**Nida Rehman**

I Am From Deccan, She Is From Gurugram

By the end of the day, I would be so exhausted that I would be ready to sell my kidney in exchange for some freedom and peace.

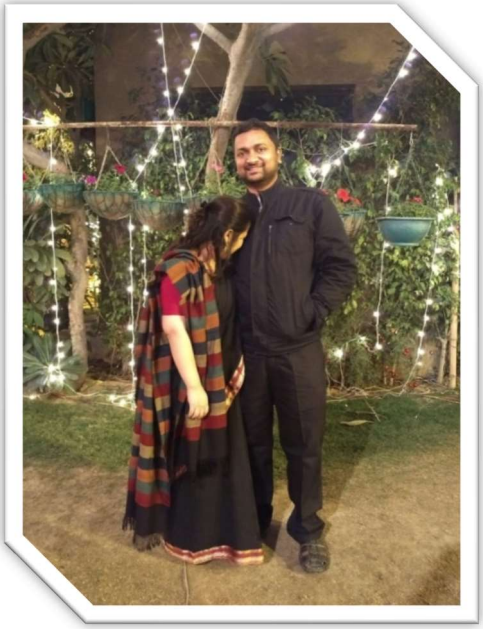

The first time I met Smriti was in the library, while preparing for an assignment to visit some survivors who became disabled due to the Bhopal gas tragedy. They lived 15 hours away. It was a topic I was interested in learning more about only because of her and the writer, Vikas Swarup.

Our relationship developed around our mutual commitment to make our country more accessible for people with disabilities—a country where everyone is equal and everything is accessible friendly.

I am a south Indian, Muslim citizen from the Deccan, and she is a Punjabi Hindu from Gurugram; a land usually volatile nowadays, due to religion. But, in the eight years we have been together, people around us have been very positive and supportive of our relationship.

When I first introduced her to my parents, I stopped myself at: “She is a friend working in the space of disability rights.” How was I to explain that she is a co-facilitator who teaches sex education to disabled women?

She Taught Me A Lot About Equality

I have learned a lot about accessibility and equality from her in the last decade, as her perspective forced me to see everything from an accessibility perspective.

When we went to Udaipur, she got tired of walking and announced, “These palaces are highly inaccessible. They don’t even have a ramp for wheelchair users or accessible toilets.”

She had an appetite for higher education as India had limited educational resources to explore accessibility. She possessed the deep desire to make this world a little more inclusive and accessible in her lifetime.

So, she secured a commonwealth scholarship for an M.Sc (Master of Science) degree at the University College London (UCL)—a step towards achieving her dream. A UCL degree!

Meanwhile, I was also a young, struggling guy working in the field of education. Often, I was suffering health wise from bouts of nausea, which took me to Mumbai’s Holy Family Hospital to get everything checked.

“Why Me?”: I Was Diagnosed With Cancer

“The reports say you don’t have any problem, man. Don’t smoke. The nausea will go away. Just get a precautionary MRI (magnetic resonance imaging) for safety’s sake,” the doctor told me, peacefully.

“I don’t smoke,” I replied feebly, with a tinge of protest.

The next day, as we were waiting for the MRI results, the doctor asked about the girl sitting next to me: “Is this your wife?”

I smiled stupidly as I responded: “Koshish hain (trying to). If God permits.”

He looked at us and said blankly, in a feeble voice, “We may have found cancer.” The earth shook, you first go into denial mode. It’s a hard reality to accept. “Why me?” is the question that plagues you.

Thus, started a long battle, and our lives became all about hospitals, doctors, finances etc. She wanted to leave London. I said, “Why? You need your degree, dost (friend)! It’s a once-in-a-lifetime opportunity. I am here only.”

“I’ll Be There For You”

She went to UCL and completed her course. Since the diagnosis, she has been running around with me from one hospital to the next, to seek various treatments for my terminal illness.

Slurping finished Frooti, she announced, “*Hum hain bey* (I am here for you)!”

All this from just one tired evening, where I happened to meet a girl in the library while finishing my assignment.

There is a dialogue in film “Kingdom Of Heaven” (2005):

Balian of Ibelin: “What is Jerusalem worth?”
King Saladin: “Nothing.” [walks away]
King Saladin: “Everything.”

Humara Jerusalem!

-**Vaseem Chaudhary**

Owning a Decision

A relationship of many concerns

News related to the barbaric killing of Shraddha Walkar is being covered daily since 14thNovember. Even other news of similar nature has started getting special attention. Some are trying to draw a parallel with other gruesome incidences like Naina Sahni Tandoor Case, Nithari killings, Arushi murder w.r.t. extensive news coverage. One can find similarity in the barbarity & mystery associated with murders/killings but, still this case stands out due to few un-parallel reasons.

The incident has raised many crucial issues of psychological, social-cultural and legal significance which needs attention and importance from all. I would prefer to stick to the social & legal aspects only, based on my personal exposure and experience. The issues of social & legal importance are; choosing of partner without consent of parents, live-in relationship, domestic violence and interfaith marriage/relationship. All the above listed challenges can still be handled but, an interfaith relationship is a mother of all challenges to a couple in our society. Interfaith marriages solemnized asper the civil law of our country are considered abnormal and treated with suspicion.

Validity of the relationship is questioned in schools, hotels, hospitals, government offices, by landlords etc. Biases and stereotypes of the service provider play a crucial role. At some places even a marriage certificate issued by the Sub Divisional Magistrate or Additional District Magistrate is of no use. Shraddha and Aftab were into an “interfaith live-in relationship” which was struggling to survive against all the odds. Families in our society are highly insecure about their identity & possessive about their hegemony in the name of values and culture. Women are considered responsible for preserving values & culture in our families by loosing their personal freedom, health and profession in the process. Ironically, they are conditioned by their families in such a manner that and they don’t see any gender based discrimination against them within their families.

Parents are self-appointed planner and executives for the marriage of their children. Parents start saving for the potential marriage many years in advance, right from the birth of a girl in the family. So, they feel lost and infuriated if they are deprived from it by their daughter. Such a deprivation leads to domestic violence against their daughter in the name of house arrest and confiscation of phones and laptops. Physical violence and killing in the name of honour are extreme manifestation of anger. Some also choose to socially ostracize their rouge daughter to express their anguish. Shraddha was no exception. She was forced to leave her house for the sake of a relationship which was too close to her heart. Such girls who dare to snap-off their ties with their parents are considered self- centred and uncultured. Domestic violence from own family members has not found the required attention from the law makers as the survivor girls are conditioned to maintain the secrecy and integrity of the family by not involving police or court. As a result girls might dare to leave her house for a marital union of her choice but, never allege her parents in the plea for protection of her partner and herself. However, NCRB shows an average of 4 lakh cases per year of crime against women from 2019 – 2021. Surprisingly, around 30.9 percent cases are due to “cruelty by husband or his relatives”. This shows that our society is insensitive towards the violence within the conventional norms. We are highly sensitive when it is an unconventional relationship and over sensitive when it is a queer relationship.

The conditioning before the marriage continues even after the marriage. Only the perpetrator changes from father or brother into husband or partner. The culture of silence against discrimination and atrocity taught by parents prevails even after the marriage, especially when the partner is self choosen. For many there is no family acceptance if they try to return due to a toxic relationship. Shraddha might also have had a self-harming situation but, she choose to stick to a toxic relationship in the lack of option or to prove the correctness of her taken decision. Parents become suspicious and alarmed if they notice their daughter continue her communication with a boy, based on common interest or professional relationship. So, forget about a live-in relationship.

A girl living with a boy without a marriage becomes talk of the town. Therefore, the couple prefer to tell others that they are married, so that they can handle the inquisitive queries from people in their professional and social circle. The girl often wears symbols of marriage to counter the investigative eyes of aunties in the neighbourhood. It also happened in this particular case when in the capacity of Shraddha's partner, Aftab stated on many occasions that he is Sharaddha's husband.

It is extremely sad and unfortunate that this particular case cannot be related with many genuine cases of love and union. Such acts must be condemned and criticized both individually and collectively. This news has added to the woes and miseries of all the interfaith couples. Such incidents also give us an opportunity to introspect the values and principles being cherished by our families and society. But, like always the debate is high jacked by those who see and show religion of the criminal as the cause of crime. The impact is such that now many image conscious Muslims in our country have managed to find Parsi connection of Aftaab Amin Poonawala. Published data by National Crime Record Bureau shows 34294 murders due to love affair & illicit relationship from 2010 to 2021. The data is a crude fact with which we all have to accept and reconcile with. It leaves no room for manipulation by those sick minds that are bleeding with the colours of religion. I guess this particular ghastly incident will also find its place in NCRB data but, will not be of any interest to biased media and blindfolded masses.

Will this incident deter people in getting into an unconventional life or relationship? It will certainly give some strength to the preaching by parents against love marriage or live-in relationship. But, will not manage to restrict girls from taking decision against the control of patriarchy on their lives. We must try to bring back the focus of debate to psycho-legal factors associated with the crime from the present focus on religion of the criminal. Else, the issues like gender rights, human rights and constitutional values will never find importance in our families and society. For sure, we don't want to retain & cherish the existing regressive values in the name of culture, religion, caste and gender.

-**Asif Iqbal**

Love and democracy

Thankfully love is irrational

From the period of Renaissance, it has taken our society centuries to at-least begin moving away from - superstition, patriarchy and feudalism, and imbibe this notion of scientific temperament. Today, democracy itself stands on the pedestal of scientific temperament. Scientific temperament, in turn, stands on rationality. That somewhere means democracy stands on rationality. But what is rationality? Put in simple words - it is the ability to reject a previous notion, by a new notion or idea based on concrete and provable evidence. This is how science has progressed - each new idea replacing an old one, with evidence.

Love, on the other hand, is irrational. One cannot explain it. Poets and philosophers have, across centuries, struggled to define love; instead, each has ended up with his/her own version of definition of love. The problem is that there are, literally, thousands of definitions of love; it is as good as saying that there is no definition of love! As discussed earlier, rationality demands evidence. Evidence demands proof. But how can you prove something that you cannot even define? Does that make love undemocratic? Paradoxically, history from all corners of the world has taught us that love is the epitome that each civilization envisages to reach. So, is modern society using a rational means (democracy) to achieve an irrational end (love)? Is this even possible?

Yes, it is possible. Firstly, democracy cannot stand on shoulders of irrationality as it's suicidal. It would lose its scientific context and throw us back into the dark era of ignorance where there was no democracy at all. That means democracy must stand on rationality. At the same time, is it safe to presume that democracy within itself contains all the tools needed for its transformation and imbibe scientific temperament to the underlying society at large? No, we know this is not true. We often see use of terms like, "conventions" in the Legislature or "constitutional morality" in Parliament/Judiciary or "good governance" in the Executive to always convey something more than what rationality stands for. This proves that rationality, on which democracy stands, is alone not enough. Rather, rationality is just a qualifier for democracy. An example would be the minimum passing marks in an examination - score anything more than 34% and you are declared pass. Be the score 35% or 99% - in both cases one qualifies the minimum criteria. Here are a few examples as proof: one cannot have an argument with a caveman living in the stone-age; one cannot have an argument with heretics and fundamentalists because instead of raising their level of argument they prefer killing the argument itself. So, it is safe to conclude that rationality forms the foundation upon which the whole structure of democracy builds and also allows the argument to continue.

One is tempted to think, is it possible to score a perfect 100% in the test of rationality? That again would be a folly! Too much rationality ends up harming the society. This is just like having a building 10 floors high without a proper foundation beneath. Here are few examples as a proof. First, is the Darwanian notion of the jungle law or the 'Survival of the fittest'. If only the fittest were to live (a rational argument) then there would be no place for mentally and physically disabled children in this

world. Secondly, the colonial mindset of the 'White man's burden', whereby they thought of bringing in development in the Third and Fourth World, again a rational argument. It is only now do we understand that development for each has a different meaning and can never be imposed. A third, current, example is the Karnataka High Court's verdict which upheld Hijab ban under reasonable restrictions.

Thus, it is now easy to say that demands of rationality (thus democracy) are at best actually minimal. An example would be the Article-14 which only makes us politically equal and not socially, because we can never be socially equal if we are not politically equal. To understand the minimalist notion lets personify it with a mountain climber. The minimum requirement or the qualifying criteria for her are the existence of hands and legs and that she is able to climb 35 days out of 100, that's all. It does not matter how strong and resilient her muscles are. It does not matter if after 35 days she just sits idle the remaining days. Or, greedily reaches the summit only to find it lonely up there.

But what matters is how the mountain climber trains herself, using which technique and in what direction does she take her next leap. All of this depends on her mindset, vision and strong will. Maybe after 35 days, for the remaining days she can help others to reach the summit with her. That way she would be able to share the happiness of their hard work amongst themselves at the summit; she would then not be alone at the top. This goes beyond rationality, because love goes beyond just rationality.

- **Tanveer**

No Honour in killing

Child is a god's gift
In whom love is a natural tendency to drift.
They are killed,
For there is someone, on whom love and trust they build.
They may be right or maybe not,
But at least on killing there should be a dot.
Traits of you only they have got,
Try to explain them like in the childhood you taught.
Because love is never to be blamed,
Try changing thoughts on what you have claimed.
Love cannot be a mistake either,
Their destiny can change neither.

-ISHA MITTAL

RIGHT TO CHOOSE

Pitfalls of civil marriage

Indian constitution gives us the right and freedom to choose a partner irrespective of caste, religion, race, and region. But can we use these rights in real? If two people love each other and want to spend their lives with each other, what is the problem with that? Why do families and society become so aggressive and try to control their decision? Actually, the main problem is not caste and faith. It is the choice, 'choosing a partner, on your own, without their consent'.

Coming to rights, India has an act called the Special Marriage Act, 1954. Under this any couple can get married irrespective of her/his faith or caste. But the process is too lengthy, tiring and complex. Due to this most of the time, many couples end up in a religious marriage leading to conversion of one partner without her/his wish. That one partner happens to be the woman in most of the times. Off-course, patriarchy rules.

It happens so because when a couple decides to get married against the will of their families, the initial phase is so difficult and unsafe. Due to social boundaries and complex marriage procedures choosing a partner of your choice is a difficult task for everyone, especially when a couple is in an interfaith relationship. The ignorance and misuse of laws and people's interference makes it more difficult for a couple to register or solemnize their marriage under the Special Marriage Act. In this, there is a practice of displaying of marriage notice on the notice board at the office of the marriage registrar, and in many states (excluding some like Delhi) there is a protocol of sending a copy of the same to the couple's houses.

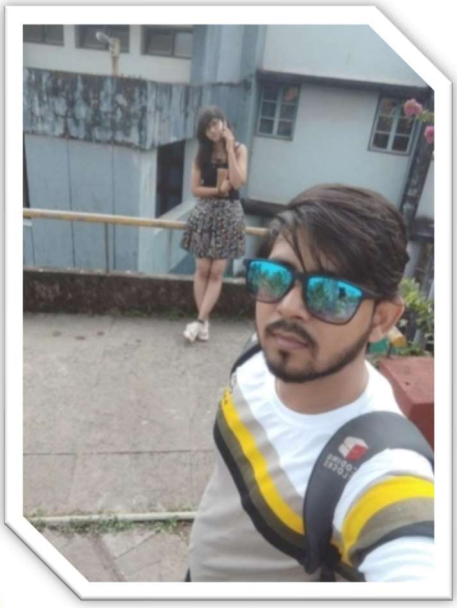

Taking my example, we both are from Delhi so we thought to do a clandestine but, legal marriage through SMA as there is no such rule for sending notices in Delhi. We both decided to disclose it later to our families. By this understanding, we both decided to get married, but the notices were still sent to our addresses, putting us in extreme trouble. My parents confined me in my own house, confiscated my phone, and tortured me mentally. After that, my partner had to file a habeas corpus and get me released from my own house, my own family. The marriage officer misused his power due to which we got into so many troubles. Similarly a lot of other couples also face these kinds of issues even when law supports them.

We do have many rights and laws to say so, but they are misused by the people in power making it difficult for others. Thus, we filed a contempt case against the unlawful activity that happened with us and the High court of Delhi gave a strict direction to all marriage officers to not send any notices

to the resident of applicants. And now, a copy of the same is pasted in all marriage registrar offices in Delhi.

I want to just say that yes' society makes it difficult. It is not in much favour of accepting changes, especially when it comes to marriages. But if we try with determination, we can bring the change. Actually, we are the change. So, keep trying consistently and do not be afraid and never stop, never give up, if you are right.

- **PARVEEN**

Talk to them, listen to them; do not kill them

Each child when born looks for new desires and aspirations. She/he has new dreams to fulfill. A child spends his initial life journey in her mother's womb for nine months, with utmost care taken by mother and family, treated like a priceless blessing, brought up with all possible comforts and love; killing that same precious gift for just one decision, that is love, is not the right at all. Nothing can make it right in any sense.

Love is an emotion where no one is right or wrong. It does not arise for the physical beauty of a person; rather a person falls in love with the personality of the other person, as a human being, his character his soul. Maybe the child has chosen the right partner. Parents should listen to them, try to understand them and reflect upon their perspective and if still parents don't find it correct decision then they should talk to them, may be convince them in their favour; but NEVER NEVER kill them. At least, let them exercise their Right to Live if not Right to Choice. These children were once the reason of your life and happiness; without them your world was so dark. They were like God's gift to you and they too consider you as their God. Killing your own child, for just one decision of their lives, choosing their partners; is no way honour, rather, it makes you a criminal whom God will never forgive. God loves those who love people in love.

-ISHA MITTAL

Marriage and Religion

A social taboo against love marriage

It is said 'institution of marriage is the basis of religion and society' and thus it is controlled by religion and society. Should not love be the basis of marriage? Is it too difficult to understand that love is the basic ingredient for any happy and successful marriage? Again, definition of successful marriage in our society is just marriage not getting annulled. It does not matter if no love is there, may be it is an abusive relationship for one partner, may be both partner badly want to get separated, but on the name of adjustment and to avoid disgrace in society, people continue with the marriage. Many a times, financial dependence keeps it going. Are these marriages actually successful?

Two people living under a roof just with some reason but not love. To my understanding without love no marriage is happy and not successful for sure.

The moment we conclude love is the basic ingredient of marriage, we somewhere pull out religion, caste, sex and other society made norms from marriage, as love knows no boundaries. One can fall in love with anyone. It is not under control at all, and this off-course leads to inter-faith and inter-caste relationships and many relationships do move up to marriage irrespective of the difference in religion/caste.

Now comes the influence of their religion or caste on their relationship and marriage.

Thousands of such inter-faith/inter-caste happy marriages have proved time and again that love is enough, rather the only necessity of any happy marriage. No marriage breaks just because of difference in religion. It may though break due to several other regular reasons. It does not mean that love marriages never go unsuccessful. With passing time and several other social factors, many of the love marriages also fail but that is majorly because of differences in personalities and other extraneous factors. For that reason, any marriage, either love or arranged can get affected.

Categorizing failing love marriages in religious colours is not correct. We have witnessed it numerous times that parents and society do taunt such partners that “see it would not have happened if the marriage would have been in same religion/ caste”. But we know it’s not the truth. Current political ideologies also influence this thought a lot. We should avoid fueling such ideologies. We need to understand that if any partner is having issues in martial relationship it needs to be dealt like any other relationship irrespective of religion.

A relationship is based on love, but yes, many a times that love also gets affected by several other extraneous factors present in family and society. Moreover, these relationships give more importance to love than anything else. They are ready to adjust with anything but love. So, when they are made to compromise with love they find difficult to adjust and thus separate. Nowhere, it is because of religion. We need to stop defaming and misinterpreting it. Arranged marriages, in turn, many a times adjust with love too.

We need to remember, an abusive marriage is also a failure. Only thing is that such failed marriage is ‘socially accepted’ but, failures of love marriages are not.

-Shabana

Love Against All Odds

Inter-religious relationships have always been considered taboo in India, especially when it comes to Hindu-Muslim couples. Society sees it as a crime, a sin, and a betrayal of cultural and religious values. As a result, such couples are often forced to hide their love and live in fear of societal backlash. In a country where hatred is allowed to be expressed openly, love between two individuals of different religions is seen as a threat to the status quo.

My partner and I are one such couple who have been struggling to be together for almost four years now. Despite our deep love and commitment to each other, societal differences have kept us apart. We are constantly reminded of the negative stereotypes and prejudices that exist against our relationship. It is heart-breaking to see how people view our love as something that we should be ashamed of, instead of embracing and celebrating it.

Many who claim to be okay with inter-religious relationships, treat it like it is a favour that they are doing for us. They are quick to point out the challenges and obstacles that we will face and often discourage us from pursuing our love. This kind of condescending attitude only makes the situation worse, and reinforces the notion that our love is not worthy of respect and acceptance.

The irony is that inter-religious relationships are often accepted in Indian cinema, but in real life, they are seen as a threat to the social fabric. People are quick to judge and dismiss such relationships, without taking the time to understand the depth and beauty of the love that exists between two individuals.

It is not easy to explain the pain and suffering that comes with being in an inter-religious relationship. The fear of rejection and backlash from our families, friends, and society, is a constant burden that we bear. Our love is constantly questioned, and we are often made to feel like we are doing something wrong.

In conclusion, the hardships faced by inter-religious couples in India are a testament to the deep-rooted prejudices and biases that exist in our society. Love knows no religion, and it is high time that we start accepting and celebrating such relationships. We should strive towards a future where people are free to love who they want, without fear of societal judgement and backlash. It is only then that we can truly say that India is a country that truly embraces diversity and celebrates love in all its forms.

- **An anonymous from Punjab**

हैं इंद्रधनुष के सब रंग हम, तो हरा -गेरुआ करना क्या ?

Who We Are

About Us

Dhanak of Humanity (www.dhanak.org.in) is a not-for-profit organization formed in 2004. It supports an individual's right to choose in matters of marriage and relationships.

Dhanak is the only organization in India working on a spectrum of issues and challenges faced by inter-faith couples. It also extends support to inter-caste and LGBTQIA+ couples and individuals who choose to assert their autonomy.

Couples approach Dhanak from all over India for help and protection against honour-related crimes. We assist them in availing a government safe house to stay in; informing parents about their whereabouts and safety; registering their presence with the police; helping them in their civil marriage (Special Marriage Act 1954); providing emotional and financial support like a family

Dhanak's volunteers and members further extend help and support to couples and individuals in need.

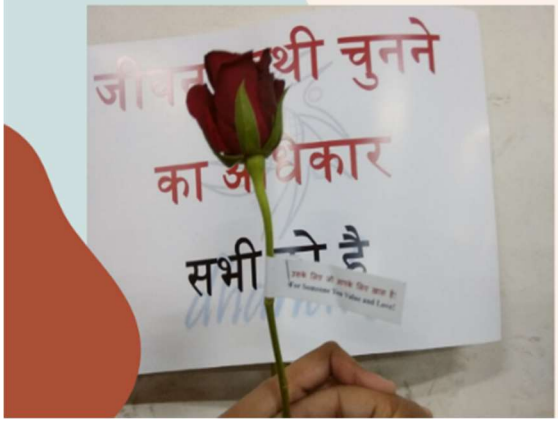

Vision & Mission

Vision:
To build a society that respects constitutional values & universal human rights

Mission:
Implementation of constitutional rights for freedom to love & choose a partner, promoting gender equality, social diversity, love and peace in the world

Values

We choose respect, compassion, empathy, and peaceful equal co-existence of faiths/ideologies; leading to the enhancement of quality of life for all.

WHAT WE DO

Promoting Right to Choose

Our Services & Interventions

1 SUPPORT TO ASPIRING COUPLES/INDIVIDUALS

- Socio-legal Counselling & Guidance
- Protection, Support, and Financial aid to Couples in need
- Facilitation for Civil Marriage (marriage solemnization)
- Safe home for stay with police protection

2 SERVICES TO MIXED COUPLES IN MARRIAGE

- Registration of marriage under Special Marriage Act
- Protection and Legal support for prevention against Honour based crimes (Special Cell & Safe House for couples)
- Linkage with Support Group for specialised Counselling & Support
- Perspective Building & Volunteering Opportunity

3 SENSITIZATION AND AWARENESS BUILDING

- Individual's Right to Choose in Marriage & Relationship
- Against Honour-Based Crimes and Forced Marriage
- Marriage without Religious Conversion & importance of Civil Marriage
- Gender Equality
- Awareness on Provisions under the Special Marriage Act

4 ADVOCACY & NETWORKING

- Amendment of the Special Marriage Act
- Demand for an Act against Honour-Based Crimes
- Demand for Safe Homes for Couples for Security /Protection
- CHAYAN: A consortium of organizations working on Right to Choose, convened by Dhanak,

5 RESEARCH & DOCUMENTATION

- Collection of secondary and primary data related to marriage from different states of India
- Collection of secondary data related to incentives given to mixe marriages by state governments.
- Documentation of cases for advocacy

6 ENGAGING WITH YOUTH AND YOUNG ADULTS

- Life Skills, diversity, equality and inclusion
- Non-Violent Communication and Behaviour
- Responsible relationship and citizenship

7 ENGAGING , ENABLING & EMPOWERING STAKEHOLDERS

- Promoting Right to choose
- Normalisation of mixed marriages
- Honour Based crimes and related legal and administrative aspects

Our Impact

Over the years, Dhanak has touched the lives of over 5000 individuals with an expertise based on real-life experiences dealing with value systems, stereotypes, families, the administration and legal systems. Every year Dhanak. Every year we touch and impact the lives of around 1000 couples. Besides directly dealing with the couples in need, Dhanak, through its advocacy work has been able to achieve the following:

- Opening special cells for couples in 15 police districts in Delhi and 22 in Haryana
- Opening of 1 safe house for couples each in Delhi and Vadodara (Gujarat).
- Admission of LGBTQAI+ couples in government run safe house in Delhi.
- Notification issued by the government of Haryana and Rajasthan for change in CMCL (court marriage check list).
- Simplified many rules/guidelines for marriage registration and solemnisation in Delhi by advocacy.
- Formed Chayan, a national network of social organisations & individuals working on the issues of right to choose in marriage and association.
- Formed a national forum of victims and survivors of honour related crimes.
- Extensive media coverage from leading national and international news agencies.

Visit us at : https://dhanak.org.in

GLIMPSES OF DHANAK

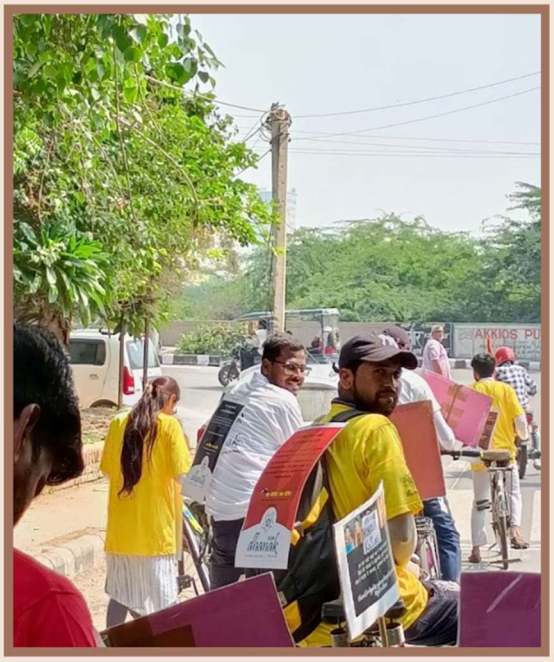

MUMBAI TO DELHI
KILLING FOR HONOR IS NOT AN HONOR,
TO LOVE IS NOT A CRIME

RING CEREMONY
"RADHE KRISHNA"

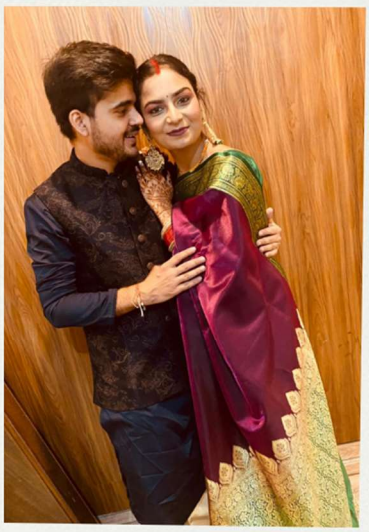

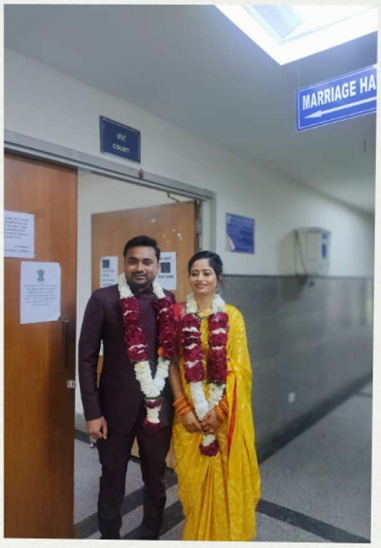

Love Transcends All Boundaries